HISTORY

आर्थिक जीवन (Economic life)

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से मिलने वाले मुख्य और विलास की वस्तुओं से पता चलता है कि लोग समृद्ध थे और उनका जीवन स्तर ऊँचा था। उनके द्वारा अपनाये गये व्यापार और व्यवसायों के अध्ययन से हम उनके ~~आ~~ आर्थिक जीवन का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

• कृषि तथा कृषि तकनीक

(Agriculture and agricultural technique)

खुदाई में मिलने अनाज के दोनों से हमें यह जानने में कोई कठिनाई नहीं मिलती कि उस समय - खेती - बाड़ी कैसे की जाती थी। कैसे में बीज कैसे डाले जाते थे तथा फसलों की बोवाई कैसे की जाती थी। मोहरें तथा मिट्टी की मूर्तियों पर बनी हुई आकृतियों से यह स्पष्ट है कि उस समय के लोगों को बैल के बारे में ज्ञान था। हम यह अनुमान लगा सकते हैं की खेती में हल चलाने के लिये बैलों का प्रयोग किया जाता था। कोलिस्तान (अब पाकिस्तान में) तथा बनवाली हरियाणा के हिसार जिले में मिट्टी से बने हुए हल

के हलों के नमूने मिले हुए हैं।
कालीबंगा (राजस्थान) में जोते हुए खेत इस बात का प्रमाण है। खेतों में हल इस प्रकार चलाया जाता है की वहाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती हुई कतारें बन जाती है। ऐसा प्रतीत होता है की दो फसलों की बोवाई एक साथ की जाती थी।

पुरातत्व वैज्ञानिकों ने फसल काटने के यंत्रों की पहचान करने का भी प्रयत्न किया है। हमें यह नहीं मालूम है की हड़प्पा के लोग लकड़ी के हत्थों के साथ लगे हुए पत्थर तीखे व लोहे का प्रयोग करते थे या हल के ऊपर लोहे के फल वाले हलों का प्रयोग किया जाता था।

हमें हड़प्पा लोगों की सिंचाई प्रणाली के बारे में भी जानकारी नहीं है। संभवत: सिंचाई के लिए पानी कुओं से खींचा जाता था। इसके अतिरिक्त धौलावीरा (गुजरात) में पानी जलाशय मिले हैं। जिससे पता चलता है की वह सिंचाई के लिए इन जलाशय में पानी इकट्ठा करते थे। अफगानिस्तान में हड़प्पा की शोर्तघई के स्थान पर नहरों की चिह्न परंतु पंजाब तथा सिंध में ऐसा चिह्न नहीं पाए गए।

पशुपालन (Domastic of Animals)

सिंधु घाटी के लोगों का एक और व्यवसाय था पशुपालन था। खुदाइयों में मिलने वाले मोहरों के अध्ययन से यह पता चलता है कि लोग गाय, बैल, भेड़, बकरियाँ और ऊँट पालते थे। लोग कुत्ते भी पालते थे।